UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक ।।

पुरवणी अंक – मार्च २०२२ (त्रैमासिक)

● शके १९४४ ● वर्ष : ९० ● पुरवणीअंक : ५

संपादक मंडळ

● प्राचार्य डॉ.सर्जेराव भामरे ● प्रा.डॉ.मृदुला वर्मा ● प्रा.श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक :

● प्रा.डॉ.पी.जी.गायकवाड ● प्रा.डॉ.गोवर्धन दिकोंडा ● प्रा.डॉ.सुरेश रामचंद्र ढेरे

*** प्रकाशक ***

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ.वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१.
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४०४५७७०२०

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवार सुटी)

मूल्य ₹ १००/-

वार्षिक वर्गणी ₹ ५००/-; आजीव वर्गणी ₹ ५०००/- (१४ वर्षे)

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्ट ने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळवणी : अनिल साठये, बावधन, पुणे 21.

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकेच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले आहे. या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

Scanned with CamScanner

ISSN No. 2394-5990

१९ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे मानव मुक्तीचे लढे - डॉ.विजय रेवजे, सोलापूर ---------- ८३
२० डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा राष्ट्रवादी दृष्टीकोण
- डॉ.वासुदेव डोंगरदिवे, मोखाडा, जि. पालघर ---------- ८५
२१ महात्मा फुले यांचे पददलितांच्या शिक्षणासंबंधीचे योगदान - प्रा.आनंद शिंदे, सोलापूर ------- ९०
२२ महात्मा जोतीराव फुले - एक दृष्टा और स्रष्टा युगपुरुष - डॉ.दत्तात्रय अनारसे, माढा, जि.सोलापूर - ९३
२३ डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि बहिष्कृत हितकारिणी सभा
- डॉ.दिगंबर वाघमारे, टेंभुर्णी, ता.माढा, जि.सोलापूर ---------- ९६
२४ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि महिला सशक्तिकरण
- डॉ.दिलीप बिराजदार, माकणी, ता.लोहारा, जि.उस्मानाबाद---------- १०१
२५ महात्मा जोतीराव फुले यांच्या कुळंबीण' अखंडातील जातीव्यवस्था व स्त्री शोषणाचा विचार
- डॉ.दिनकर मुरकुटे, एस.एम.जोशी कॉलेज, हडपसर, पुणे ---------- १०५
२६ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या आर्थिक व कृषिविषयक विचारांचा विश्लेषणात्मक अभ्यास
- डॉ.स्मिता पाकधाने, नाशिक ---------- १०९
२७ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : बौद्ध धम्म प्रभाव आणि वारसा, सामजिक अस्तित्वाचा पर्यायी समृद्ध मार्ग
- डॉ.प्रभाकर कोळेकर, सोलापूर---------- ११६
२८ आंबेडकरवादी इतिहास पद्धतीचे वैचारिक तत्त्वज्ञान व त्याची मिमांसा
- डॉ.प्रविण बोरकर, उल्हासनगर, मुंबई---------- १२३
२९ आधुनिक भारताच्या सामाजिक चळवळीचा दीपस्तंभ महात्मा फुले कृत सत्यशोधक समाज
- डॉ.राजेंद्र गायकवाड, टेंभुर्णी, जि.सोलापूर. ---------- १२९
३० महात्मा जोतिराव फुले यांचे सत्यशोधक समाजाबाबतचे विचार
- डॉ. सुशिल शिंदे, पंढरपूर, जि.सोलापूर ---------- १३१
३१ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे दलित चळवळीतील योगदान
- डॉ.संजीव बोडखे, खटाव, जि.सातारा ---------- १३६
३२ महात्मा ज्योतीराव फुले यांचे सामाज सुधारणाविषयक विचार
- प्रा.दत्तू शेंडे, कर्जत, जि.अहमदनगर. ---------- १३९
३३ आधुनिक भारताच्या संविधान निर्मितीत डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान
- डॉ.सुभाष वाघमारे, सातारा. ---------- १४१
३४ डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी दलित आत्मकथा साहित्य
- डॉ.प्रमोद परदेशी, कर्जत, जि.अहमदनगर. ---------- १४५
३५ समाज परिवर्तनाच्या चळवळीचे आद्य प्रवर्तक महात्मा फुले यांचे विचार व कार्य : एक अभ्यास
- डॉ.गौतम ढाले, जयसिंगपूर, जि.कोल्हापूर. ---------- १४९
३६ महात्मा फुले यांचे शेतकऱ्यांच्या प्रगतीबाबत विचार - डॉ.घनश्याम महाडीक, अमरावती ---- १५४
३७ महात्मा फुले यांचे भारतीय शेती व शेतकऱ्याविषयीचे विचार
- १) डॉ.उद्धव घोडके, पुणे; २) डॉ.पांडुरंग लोहोटे, पुणे. ---------- १५६
३८ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय समाजाच्या शिक्षणाचा हक्क
- डॉ.संतोष जाधव, मोखाडा, जि.पालघर. ---------- १५९

Scanned with CamScanner

ISSN No. 2394-5990

डॉ.बाबासाहब अंबेडकर के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी दलित आत्मकथा साहित्य

डॉ.प्रमोद परदेशी
दादा पाटील महाविद्यालय, कर्जत, जि. अहमदनगर.

प्रस्तावना :

डॉ.बाबासाहब अंबेडकर महान चिंतक, विचारक, समाजसुधारक तथा न्यायवादी महापुरुष थे। डॉ.बाबासाहाब अंबेडकर की वैचारिकी का परिप्रेक्ष्य व्यापक है। वह केवल दलित समाज के शोषण तक सीमित नहीं हैं बल्कि सामाजिक समता, न्याय, बंधुता और मानवता की स्थापना का समग्र चिंतन और पक्षधर है। परंपरागत वर्चस्ववादी व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष की बुनियाद है। डॉ.बाबासाहब के विचारधारा का मूल मंत्र 'शिक्षित बानो, संघटीत बानो और संघर्ष करो' का नारा है। हासिये पर रहे समाज का उद्धार करना ही उनके चिंतन का मूल बिंदू है। डॉ. बाबासाहब महात्मा फुले जी के विचारों से प्रभावित होकर मूक समाज के नायक बने और उनके उद्धार के लिये जीवन भर लढते रहे। परंपराओ की जकडन में जकडे हुए, चक्रव्यूह में फसे हुए, भयग्रस्त मनुष्य को भ्रांति के विपरित मतों, व्यूहरचना तोडकर उठ खडा होने का, उत्थान का मार्ग दिखाया डॉ.बाबासाहब ने। उन्होंने ही मनुष्यता को सबसे बडा मूल्य माना। दलितों की मानव के रूप में अस्मिता जागाई। दलितों को उन्होंने बंध मुक्त किया ।क्योंकि उनका ध्येय था मानव मुक्ति।[१] व्यक्ति के लिए समतामूलक समाज का महत्व होता है इसलिये वे प्राणवान और उद्दात समाज के लिये सामाजिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना करना चाहते थे।आदर्श समान वही है जो स्वतंत्रता, समानता पर आधारित हो, वस्तुतः वही लोकतंत्र है। उनकी यह धारणा थी की इस सामाजिक लोकतांत्रिक प्रणाली में प्रत्येक नागरिक को सभी गतीविधियो में सहभागिता का और उन्नति का समान अवसर मिलेगा। सामुहिक जिजीविषा की समतामूलक चेष्टा ही लोकतांत्रिक प्रणाली की संचेतना है डॉ.बाबासाहब ने लोकतंत्र के इस व्यापक और गहन अर्थ प्रकाश को अपने चिंतन और कार्य से व्यक्त होने दिया था। वे लोकतंत्र को राज्य की सीमाओं से बाहर लाकर समग्र सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि समरसता मूलक समतावादी चेष्टाओं में प्रतिफलित देखना चाहते थे।[२] डॉ. बाबासाहब के यह परिवर्तन की विचारधारा सामाजिक क्रांति की नीव मानी जाती है। उनके विचारों ने दलित जागृति के बीज बोये। जो पल्लवित और पुष्पित होकर एक सशक्त दलित सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में प्रस्फुटित हुए। इन्हीं आंबेडकरीवादी विचारों प्रेरित होकर दलित साहित्य का जन्म और विकास हुआ। दलित साहित्य ईश्वर, आत्मा, अध्यात्म, पुनर्जन्म, और जाति व्यवस्था को नाकारता है। हिंदू परंपरायें, रुढिया, सडी-गली रीतियों के प्रति विद्रोह है। वह मानव मुक्ति, स्वातंत्र, न्याय, समता, बंधुता,आदि को स्वीकार करता है और दलितों के मन में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मवलंबन आदि जागृत करके पोथीनिष्टता, अंधविश्वास और परमेश्वर विषयक कल्पना आदि को नाकारता है। यह अज्ञान, शोषण और दमन का विरोध करता है। दलित साहित्य विद्रोही साहित्य है।जनतंत्र, समाजवाद और बुद्धवाद प्रणाली आंबेडकरवाद का केंद्र हैं।[३]

डा.बाबासाहब ने अपने जीवन काल में दलित अस्मिता की जो लडाई लढी थी, वह ऐसा जीवन संघर्ष था, जिसने दलितों में आत्मविश्वास जगाया। यही चेतना और उर्जा दलित आंदोलन की प्रेरणा बनी। जहां दलित राचनाकारो ने महात्मा फुले को अपना विशिष्ट प्रचारक माना वही डॉ. बाबासाहब को अपना शक्ति पुंज स्वीकार किया , ऐसा शक्ति पुंज जिसे समग्र दलित लेखक वैचारिक उर्जा ग्रहण करता है।[४] युगप्रवर्तक डॉ.बाबासाहब अंबेडकर का जीवन संघर्ष दलित साहित्यकारों की प्रेरणा है। उन्होनें युगो-युगों से अस्पृश्य, शोषित, पीडित, अतिशूद्र काहलानेवाले समाज में आत्मविश्वास, स्वाभिमान की और इंसानियत की चेतना जगायी। डॉ.बाबासाहब के मानवतावादी विचारों को आत्मसात करके, और उनके विचारों से प्रेरित होकर अनेक लेखकों ने अपने भोगे जीवन यथार्थ को अभिव्यक्त किया। आंबेडकरवादी यह दलित साहित्य सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि विषमता को नष्ट करके समतामूलक समाज की स्थापना करने का सदेश देता है। डॉ.जटाव अपनी आत्मकथा में लिखते है इसे लिखने का एक मात्र उद्देश अपने स्वयं के जीवन तथा कार्यों का विस्तृत विवरण देना नहीं है, केवल यह प्रदर्शित करना है की अपने महान उद्धारक डॉ.बाबासाहसब के नाम से मैं किस प्रकार परिचित हुआ हूं ।[५] मराठी दलित साहित्य लेखन आंदोलन से प्रेरित होकर हिंदी दलित साहित्यकारोंने आत्मकथा, कविता, उपन्यास, कहानी नाटक, आलोचना, पत्रकारिता

Scanned with CamScanner

आदि विधाओं में डॉ.बाबासाहब के विचारों को अभिव्यक्त किया।

सृजनात्मक दलित आत्मकथाकारों में ओमप्रकाश 'वाल्मीकि की जुठन' मोहनदास नैमिशराय की 'अपने-अपने पिंजरे' कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप', सुरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत' और 'संतप्त' आदि आत्मकथाऐं महत्वपूर्ण है। इन आत्मकथाओं में डॉ.बाबासाहब के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है।

सन १९९५ में प्रकशित मोहनदास नैमिशराय की 'अपने-अपने पिंजरे' हिंदी की पहली सृजनात्मक दलित आत्मकथा मानी जाती है। पत्रकारिता शैली में लिखी इस आत्मकथा में नैमिशराय जी ने मेरठ और मुंबई शहर के दलित जन-जीवन की संस्कृति का विस्तृत वर्णन किया है। अपने-अपने पिंजरे आत्मकथा सिर्फ लेखक की अकेले की आत्मकथा नहीं है बल्कि दलित समाज के साथ उस शहर की आत्मकथा है, जहा से १८५७ की पहली क्रांति आरंभ हुई थी। इस आत्मकथा में मेरठ शहर के विस्तृत वर्णन में सन १८५७ का स्वाधीनता संग्राम, डॉ.बाबा साहब का मेरठ दौरा, समाज में औरतो की स्थिति, चमार जाति की स्थिति, जातिगत द्वेष, सम्प्रदायिक दंगे, आदि का चित्रण किया है। बरसात के दिनों में दलित बस्ती का जीवन दर्दनाक हो जाता था। उस समय औरतो की मानसिक स्थिति का चित्रण करते हुए वे लिखते है हर घर में कोई न कोई दर्द, टीस, बेचैनी थी, जो मन के उदास दिवारों के बीच जो जाने-अनजाने फुटकर बाहर आ जाती थी। ऐसे समय पर औरते अपनी कथा-व्यथा कहती और दुसरों को सुनती।[६] इन्हीं हालातों में नैमिशराय जी अपनी पढाई जारी रखते है। पढाई करते समय उन्हें अपनी जाति के कारण जो अध्यापकों द्वारा किए गये दुर्व्यवहार से अनेक यातनायें सहनी पडी। डॉ.बाबासाहब के कार्यों को जानबुझ कर उल्लेख नहीं किया जाता था। उसके आघात से मोहनदास जी को गहरी चोट पहुंची। स्कूल की शिक्षा के बाद जब वे मुंबई भाग जाते है तो मुंबई के झुग्गी-झोपडी में रहने वाले दलितों को जन-जीवन उन्हें झाकझोर देता है ।उनकी साहित्यिक यात्रा का आरंभ यही से शुरू होता है।

मोहनदास नैमिशराय जी ने आत्मकथा में ६ दिसंबर १९५६ के दिन का विशेष वर्णन किया है। जिस दिन बाबासाहब का निधन हुआ था। बस्ती में जैसे मातम उतर आया था। उस दिन दलितों के घर में चुल्हा नहीं जला था। सर्दी के दिनों में मांए अपने बच्चो को लेकर भूखी सोई थी, पुरुष जाग रहे थे। उनके चेहरे उदास और आखें नम थी। आत्मकथा का अंत लेखक की मुंबई से पुनः मेरठ की यात्रा से होता है।

'जूठन' ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की १९९७ में प्रकाशित उल्लेखनीय आत्मकथा है। जुठन आत्मकथा में वाल्मीकि जी ने अपने जीवन के उतार-चढाव के साथ सामाजिक संरचना में जाति व्यवस्था का कहर झेलते हुए चुहडा जाति के तिरस्कृत रूप का भयावह और त्रासद सच को अभिव्यक्त किया है। इसके बारें में वाल्मीकि जी कहते है दलित जीवन की पीडाऐं असहनीय और अनुभव दग्ध है। ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्ति में स्थान नहीं पा सके एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था में हमने सांसे ली है, जो बेहद क्रूर और अमानवीय है। दलितों के प्रति असंवेदनशील भी।[७] ओमप्रकाश वाल्मीकि जी को उनके मित्र हेमलाल जटाव ने डॉ. बाबासाहब अंबेडकर जीवन परिचय नामक एक पुस्तक पढने के लिये दी। उस पुस्तक के लेखक का नाम था चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासू। वाल्मीकि जी ने जैसे ही उस पुस्तक को पढना शुरू किया वे एकदम अछूते अनुभावों से गुजरने लगे उन अनुभावों को अभिव्यक्त करते हुये लिखते है मुझे लगा जीवन का एक अध्याय मेरे सामने उघड गया है। ऐसा अध्याय जिस से मैं अनजान था। डॉ.आंबेडकर के जीवन ने मुझे झाकझोर दिया।[८] उस समय वाल्मीकि जी ने डॉ.आंबेडकर की सारी किताबे पढी। इन किताबों को पढना वाल्मीकि जी के जीवन का निर्णायक क्षण था। उनके भीतर एक चेतना प्रवाहित हो गई थी। इन किताबों ने वाल्मीकि जी की चुप्पी को तोड दिया था। उनके मौन को वाणी दी थी। डॉ.बाबासाहब के विचारों से परिचित होने के बाद व्यवस्था के प्रति वाल्मिकि जी की संघर्ष भावना दृढ मूल हो गई। वे जान गये की डॉ.अंबेडकर जी के विचार मात्र दार्शनिक विवेचनाओं पर आधारित नही हैं, बल्कि जीवन और संघर्ष पर आधारित है। डॉ. बाबासाहब दलितों की मुक्ती को सर्वोपरी मानते है। वे परिवर्तन के साथ समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते है। उसके लिए शिक्षा, संघठन और संघर्ष को महत्व देते है। वाल्मीकि जी ने अपने जीवन में सामाजिक जाति व्यवस्था की दर्द नाक पीडाओं को सहते हुए, अपने अभाव ग्रस्थ जीवन में अनेक समस्याओं से झुझते हुए, अविरत संघर्ष करते हुए अपनी पढाई पूरी की। उन्हें आर्डीनंस फैक्टरी में नौकरी मिल जाती है। अंबरनाथ में प्रशिक्षण के बाद महाराष्ट्र के चन्द्रपूर में नियुक्ति और देहरादून में तबादला हो जाता है।

Scanned with CamScanner

ISSN No. 2394-5990

उनका जीवन जहां सामाजिक उत्पीडन और शोषण से भरा हुआ था, वहीं व्यवस्था के नाम पर लदी गई बंधन और मार्यादायें उनके जीवन की विपन्नतायें बनकर रह गई थी। सामाजिक विसंगतियो और आर्थिक विवशता ने उनका जीवन नर्क बना दिया था। तबादले के बाद महानगरों में जातिय उत्पीडन का गहरा भाव काम नहीं हुआ। वाल्मीकि जी अपनी गहरी पीडाओं की अभिव्यक्ति के लिये साहित्य को माध्यम बनाते है। वे इसके संदर्भ में लिखते है बुद्ध के मानवीय विचारों ने मुझे प्रभावित किया। परिवर्तित समष्ठी में कुछ भी अपरिवर्तनीय नहीं है ।मानव सर्वोपरि है करुणा और प्रज्ञा व्यक्ति को उच्चता की ओर ले जाती है।[९] वाल्मीकि जी को दलित आंदोलन की उर्जा और चेतना के दर्शन महाराष्ट्र में होता है । वे दलित चेतना को अधिक सक्षमता से अभिव्यक्त करनेवाले और दलित अस्मिता को चालानेवाले दलित आंदोलन में सक्रीय होते है । अपने साहित्य लेखन और अन्य गतीविधियो के माध्यम से इस वैचारिक आंदोलन को अधिक तेज करने में अपना योगदान देते है।

सन १९९९ में प्रकाशित कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा में अंबेडकर की विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कौशल्या जी के माता-पिता डॉ.बाबासाहब के भाषणों और विचारों से इतने प्रभावित थे कि मजदूर होने के बावजूद भी आर्थिक कठीणाईयों का सामना करते हुए उन्होंने अपने बेटीयों को पढाया। उस समय अछूत जाति से पढने वाली और मैट्रिक पास करने वाली वह एकमात्र लडकी थी। कौशल्या जी जातिगत ऊंच-नीच भेदभाव को ही नही बल्कि जाति को ही नहीं मानती थी। वह जीवन में अनेक प्रसंगों में बेबाक तरीके से जातिगत सवालों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त करती है। उनके जीवन पर बाबासाहब के विचारों का इतना गहरा प्रभाव है की वह स्वयं आंतरजातिय विवाह तो करती ही है बल्कि अपने बेटीयों के विवाह भी पंजाबी और मद्रासी लडकों के साथ करवाती है।

डॉ.बाबासाहब अंबेडकर के विचारों से प्रभावित सूरजपाल चौहान की सन २००२ में प्रकाशित 'तिरस्कृत' आत्मकथा महत्वपूर्ण है। सूरजपाल चौहान दलित समाज में अपने अधिकार और आत्मसम्मान के प्रति बढती जागरूकता का महत्वपूर्ण कारण डॉ.बाबासाहब अंबेडकर के विचारों को मानते है ।शिक्षा, संघटन और संघर्ष के सूत्र ने देश के अनेक दलितों ने अपना जीवन परिवर्तित किया। लेकिन शिक्षित दलित भी आज छोटी-छोटी जातियों में विभक्त है। दलितों में जो भंगी जाति है वह सवर्ण तथा दलित दोनों से तिरस्कृत है। सूरजपाल जी को इस जाति का होने के कारण उपेक्षित और तिरस्कृत जीवन की वेदना सहनी पडी। सूरजपाल जी विभेद की इस रेखा को आपसी ऐक्य के लिए हानिकारक मानते है। वैयक्तिक स्वार्थ और अहं के कारण दलित आपस में लडने में अपनी शक्ति खर्च कर रहें है। सुरजपाल इस अंतर्विरोध के घोर विरोधी है। वे स्वसूर के देहावसन के बाद परंपरागत दिये जानेवाले भोजन की कडी आलोचना करते हुए बाबासाहब के आदर्श विचारों का अनुकरण की बात करते है। इस कारण उन्हें उनके रोष का सामना भी करना पडता है यह जवाई किसी चामर की औलाद लागता है। अरे महामूर्ख हमारे गुरु तो महर्षि वाल्मीकि है, हमें अंबेडकर से क्या लेना देना। बंद कर अपनी बकवास, इतनी देर से चमार राग आलापे जा रहा है।[१०] सूरजपाल जी अपने जीवन में डॉ.बाबासाहब के विचारों का पूर्ण निर्वाहन करते है और अपने परिवार तथा समाज को इसमें शामिल करते है। दलित समाज के उत्थान हेतु अनेक विषयों पर घर में लंबी बहस करते और सभी को उसमें सम्मिलित करते है। लेकिन सुरजपाल जी को नई पीढी के व्यवहार को लेकर काफी चिंतित है।

'संतप्त' आत्मकथा में सुरजपाल जी ने जातिगत वेदना का जो दंश उन्हें जीवनभर सहना पडा उसकी आपबिती है। अभावों में जीवन संघर्ष करते हुए आगे बढते समय कदम -कदम पर उन्हें अपमानित और तिरस्कृत होना पडा। नौकरी करते समय जो त्रासद अनुभव झेलने पडे वह मानसिक आघात करने वाले थे। ऐसे हालातों में जीवन में वे डॉ.बाबासाहब के विचारों का अनुपालन और निर्वाहन करने में प्रतिबद्ध रहे।

निष्कर्ष :-

कहा जा सकता है की डॉ. बाबा साहब महान चिंतक, विचारक, समाजसुधारक तथा न्यायशास्त्री थे। उनका सामाजिक चिंतन जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित था। डॉ.बाबासाहब का मूल उद्देश्य संस्कृति और परंपरा के नाम पर अमानवीयता को प्रोत्साहन देनेवाले तत्वों को समूल नष्ट करके समतामूलक समाज की स्थापना करना था। उन्होनें सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना के लिए दमित चेतना को उभारा और दलित अस्मिता के लिए वैचारिक आंदोलन खडा करके समाज परिवर्तन के लिए अविरत संघर्ष किया। इन्हीं विचोरों से प्रेरित दलित आत्मकथाकारों ने अपने जीवन की व्यथा-कथा को

Scanned with CamScanner

अभिव्यक्त किया। उनकी आत्मकथाओं में उनकी अदम्य जिजीविषा और समाज परिवर्तन के लिए जीवन संघर्ष दिखाई देता है।

संदर्भ :-

१. दलित साहित्य उदगम और विकास, डॉ. योगेंद्र मेश्राम, पृ.०७.

२. डॉ.अंबेडकर चिंतन और विचार, डॉ.राजेंद्र मोहन भटनागर, पृ.१३.

३. स्वातंत्रोत्तर हिंदी दलित नाटकों में शोषण के विभिन्न रूप, डॉ.सुरेश तायडे, पृ.३०२.

४. दलित साहित्य का सौदर्य शास्त्र, ओम प्रकाश वाल्मीकि, पृ.५३.

५.हिंदी दलित आत्मकथाऐं एक अनुशीलन, परमार अभय, पृ. १३४.

६. अपने-अपने पिंजरे, मोहनदास नैमिशराय, पृ.२४.

७. जूठन, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.७.

८. जूठन, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.९०.

९. वही, पृ.१२३.

१०. तिरस्कृत, सूरजपाल चौहान, पृ.१२२.

Scanned with CamScanner